



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी, 2025)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

गिलोय (अमृता): एक महत्वपूर्ण औषधि

(अमन श्रीवास्तव, हरिबक्श एवं शिवम मौर्य)

उद्यान विज्ञान विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: manaman701@gmail.com

गिलोय (*टिनोस्पेरा कार्डिफोलिया*), मेनीस्पर्मसी कुल का एक महत्वपूर्ण पौधा है। आयुर्वेद में इसे विशेष स्थान प्राप्त है। इसको कई नामों से जाना जाता है जैसे अमृता, गुडुची, छित्ररुहा, चक्रांगी, आदि। आयुर्वेद के अनुसार यह कई बीमारियों को दूर करने के लिए उपयोग में लायी जाती है।

गिलोय एक लंबी लता होती है इसके पत्ते हृदय के आकार के और लंबे डंठल वाले होते हैं, पुराने तनों का व्यास लगभग 2- 2.5 सेमी. तथा तनों और शाखाओं पर सफेद उभरे हुए दाग होते हैं इसकी छाल- भूरी या हल्की सफेद, मससेदार होती है और आसानी से छील जाती है। ऐसा माना जाता है कि गिलोय में दूसरे पौधों के गुण खींच लेने की क्षमता होती है। यह जिस पेड़ के ऊपर फैलता है उसके सारे औषधीय गुण खुद में समाहित कर लेता है किन्तु इस बात की कोई वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं है। जो गिलोय नीम के वृक्ष पर चढ़ती और रहती है उसे नीम गिलोय कहते हैं, नीम गिलोय औषधि के रूप में सबसे उत्तम मानी जाती है। बहुत पहले से इस पौधे का इस्तेमाल औषधि के रूप में किया जाता रहा है।

उपयोगी भाग

जड़ तथा तना मुख्यतः उपयोग में लाया जाता है।

मुख्य रासायनिक अवयव

क्रम सं.	सक्रिय घटक के प्रकार	मुख्य घटक	स्रोत
1.	ऐल्कलाइड्स	बरबेरिन, कॉलिन, पलमैटिन, टैम्बेटीने, मैगनोंफ्लोरिन, टिनोस्पोरिन, आइसोकोलम्बिन	तना, जड़
2.	ग्लाइकोसाइड्स	टिनोकार्डीसाइड, कार्डियोसाइड	तना
3.	डिटरपेनोइड्स	फ्यूरानोलैक्टोन	पूरा तना
4.	स्टेरॉइड्स	बीटा- सीटोस्टेरॉल	तना का वायवीय भाग
5.	एलिफैटीक घटक	ऑक्टाकोसाइनाॅल	पूरा तना
6.	अन्य	गिलोइन, टिनोस्पोरिक एसिड	जड़

विस्तार

गिलोय का विस्तार सम्पूर्ण भारतवर्ष में समुद्रतल से 1200 मीटर की उंचाई तक पाया है। भारतवर्ष के साथ-साथ श्रीलंका तथा म्यांमार के जंगलों में प्राकृतिक रूप से पायी जाती है।

गिलोय की खेती के लिए जलवायु एवं मिट्टी

यह मुख्यतः एक उष्णकटिबंधीय जलवायु का पौधा है लेकिन इसका विस्तार सभी प्रकार के जलवायु वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। बलुई दोमट मिट्टी और पर्याप्त जल निकासी वाली मृदा इसके लिए उपयुक्त होती है।

प्रवर्धन

गिलोय के प्रवर्धन के लिए तना कटिंग और बीज दोनों उपयुक्त होता है। तनों की कटिंग से प्रवर्धन करना पौध प्रवर्धन की सर्वश्रेष्ठ विधि होती है। कटिंग द्वारा प्रवर्धन के लिए उपयुक्त समय जून-जुलाई होता है इसके लिए दो गांठों वाले 6-8 इंच की कटिंग का उपयोग किया जाता है।



मिट्टी तैयार करना तथा उर्वरक का प्रयोग

रोपण से पूर्व खेत की अच्छी तरह जुताई कर खरपतवार मुक्त किया जाता है। गिलोय को बहुत खाद और उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए खेत की तैयारी करते समय 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद और 150 किलो नाइट्रोजन का प्रयोग पर्याप्त होता है। नाइट्रोजन की मात्रा को आधा-आधा करके दो बार में दिया जाता है।

पौधों की दर

एक हेक्टेयर भूमि के लिए गिलोय की लगभग 2500 कटिंग की आवश्यकता पड़ती है। मातृ पौधे से प्राप्त तने को 24 घंटों के अंदर ही खेत में सीधे रोपण करना उपयुक्त माना जाता है।

पौधे की दूरी

गिलोय के अच्छे उत्पादन के लिए पौधे की दूरी 3×3 मीटर² रखते हैं। गिलोय के पौधों को झाड़ी या पेड़ की सहारे की जरूरत पड़ती है।

सिंचाई

इस फसल को सिंचाई की बहुत ज्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती है। गर्मियों के मौसम में लंबे समय तक वर्षा न होने पर सिंचाई की जरूरत पड़ सकती है।

फसल पकना और कटाई

तने की कटाई पतझड़ के समय की जाती है जब इसके तने लगभग 2-2.5 सेमी. व्यास के हो जाते हैं। एक बार पौधे लगाने से 2-3 साल तक निरंतर पैदावार ली जा सकती है।

पैदावार

गिलोय के पौधों से प्रति हेक्टेयर करीब 450-500 क्विंटल तक उपज ली जा सकती है।

गिलोय के औषधीय गुण

गिलोय का उपयोग गठिया, बुखार, टीबी, कैसर, सफ़ेद दाग, पेशाब में रुकावट, नेत्र रोग, हाथी पाँव, कान का मैल, इत्यादि बीमारियों में किया जाता है।

1. **बुखार में गिलोय के औषधीय गुण :-** गिलोय में ऐसे एंटीपायरेटिक गुण होते हैं जो पुराने से पुराने बुखार को भी ठीक कर देते हैं। इसी वजह से मलेरिया, डेंगू और स्वाइन फ्लू जैसे गंभीर रोगों में होने वाले बुखार में गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है।
2. **पाचन में गिलोय के फायदे :-** आजकल आहार-विहार के नियमों का पालन होना कठिन हो गया है जिसके फलस्वरूप उदर रोगों से पीड़ित रोगियों की संख्या बहुत बढ़ गई है। जिससे अपच होना, खुल कर भूख नहीं लगना, कब्ज होना, पित्त व वात (एसिडिटी व गैस) का प्रकोप होना, धीरे- धीरे शरीर में कमजोरी आना, थोड़े से परिश्रम से ही थकावट होना, सांस फूल जाना आदि परिणाम होते हैं। गिलोय के उपयोग से भूख बढ़ती है, आहार का ठीक से पाचन होने लगता है, कमजोरी व निश्तेजता दूर होती है, रक्त की शुद्धि एवं रक्त कड़ों की वृद्धि होती है जिससे शरीर में शक्ति की वृद्धि होती है।
3. **खांसी के इलाज के लिए गिलोय का प्रयोग :-** गिलोय में एंटीएलर्जिक गुण होने के कारण यह खांसी से जल्दी आराम दिलाती है। खांसी दूर करने के लिए गिलोय के काढ़े का सेवन करना चाहिए।
4. **बवासीर में गिलोय का उपयोग :-** गिलोय के लाभ पाचन समस्या को दूर करने के साथ ही बवासीर का इलाज करने में भी होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि गिलोय में बवासीर का इलाज करने के गुण होते हैं। एंटी- ऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लामेटरी गुणों से भरपूर गिलोय बवासीर की सूजन और दर्द से भी राहत दिलाता है। इसके लिए गिलोय के रस का नियमित सेवन करना लाभकारी होता है।
5. **गिलोय के औषधीय उपयोग आँखों के लिए :-** आयुर्वेद के अनुसार आँखों के देखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए भी गिलोय का उपयोग किया जा रहा है। इसके लिए गिलोय के रस को आँखों पर लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि गिलोय का रस दृष्टि स्पष्टता को बढ़ाने में सहायक होता है।
6. **जोड़ों के दर्द के लिए :-** गठिया रोग की समस्या को गिलोय की मदद से दूर किया जा सकता है। रोजाना सुबह शाम आप गिलोय का काढ़ा बनाकर अगर पीते हैं तो गठिया रोग में राहत मिल सकती है। इसमें एंटी इन्फ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं जिससे दर्द और सूजन से राहत मिलती है।

7. **एंटीऑक्सीडेंट गुण के रूप में :-** गिलोय में अधिक मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो शरीर में फ्री रेडिकल्स को कम करते हैं और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करते हैं। यह त्वचा की सेहत के लिए भी फायदेमंद है क्योंकि यह त्वचा को युवा और स्वस्थ बनाए रखने में मदद करती है।
8. **मधुमेह में सहायक :-** यह शरीर में अत्यधिक रक्तचाप की मात्रा को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। यह इंसुलिन के स्तर को बढ़ाने में भी सहायक होती है। मधुमेह के रोगियों के लिए गिलोय का सेवन एक प्राकृतिक उपचार के रूप में काम कर सकता है।
9. **गिलोय के उपयोग में सावधानी :-** अगर गिलोय सेवन उपयुक्त तरीके से नहीं किया जाए तो, कुछ सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है जैसे-
10. **अत्यधिक सेवन के दुष्प्रभाव :-** गिलोय का अधिक सेवन पेट में जलन, गैस, और अन्य पाचन समस्याओं का कारण बन सकता है इसलिए इसका सेवन संतुलित मात्रा में करना चाहिए।
11. **एलर्जी और संवेदनशीलता :-** कुछ लोगों को गिलोय से एलर्जी हो सकती है। ऐसे में इसे लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लेना आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति को गिलोय का सेवन करने के बाद त्वचा पर लाल धारिया या अन्य एलर्जी के लक्षण दिखाई देने लग जाए तो तुरंत इसका सेवन बंद कर देना चाहिए।
12. **गर्भवती महिलाओं के लिए सावधानी :-** गर्भवती महिलाओं को गिलोय का सेवन करने से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए, गर्भावस्था के दौरान हार्मोनल परिवर्तन होते हैं और गिलोय का सेवन इन पर प्रभाव डाल सकता है।